

ल िंगाष्टकम्

ल िंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरार सुरार्चित ल िंगिं
निमि भालसत शोलभत ल िंगम् ।
जन्मज दुःख विाशक ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 1 ॥

देमुनि रिरार्चित ल िंगिं
कामदहि करुणाकर ल िंगम् ।
राणि दर् विाशि ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 2 ॥

सि सुगिंध सु ेवर्त ल िंगिं
बुद्ध विधि कारण ल िंगम् ।
लसद्ध सुरासुर िंददत ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 3 ॥

किक महामण्ण भूवित ल िंगिं
फण्णर्नत िेष्टित शोलभत ल िंगम् ।
दक्षसुयज विाशि ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 4 ॥

कुिंकुम चिंदि ेवर्त ल िंगिं
रिंकज हार सुशोलभत ल िंगम् ।
सिंचत र्ार विाशि ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 5 ॥

देगिणार्चित सेवित ल िंगिं
भािैभिषतलभरे च ल िंगम् ।

ददिकर कोदि रभाकर ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 6 ॥

अटिदळोररिष्टित ल िंगिं
सिसमुद्धि कारण ल िंगम् ।
अटिदरद्र विाशि ल िंगिं
तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 7 ॥

सुरगुरु सुरि रूज्जत ल िंगिं
सुरि रुट् सदाचित ल िंगम् ।
रमर्दिर्मात्मक ल िंगिं

तत्प्रणमालम सदाशिशि ल िंगम् ॥ 8 ॥

ल िंगाटिकलमदिंरुण्युः ठेष्शशि सप्धौ ।
लशि ोकमिप्िोनत लशि सह मोदते ॥
इनत श्री ल िंगाटिकम् ॥